UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज़ कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024
Impact Factor: 6.0
ISSN: 2393-8358

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्रीमती मुकेशी मीना
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज आफ एजुकेशन पदेवा करौली
श्री नितेंद्र कुमार शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष, वीणा मेमोरियल कॉलेज आफ एजुकेशन पदेवा करौली
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज आफ एजुकेशन पदेवा करौली

सारांश

शिक्षा को व्यक्ति और समाज दोनों का विकास करने वाली शक्ति के रूप में जाना जाता है एक तो शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार व विकास की प्रणाली है तो दूसरी ओर संपूर्ण समाज को नियंत्रित व संस्कृति करने की प्रक्रिया है विष्णु पुराण में कहा गया है कि "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात शिक्षा ही अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करती है और शिक्षित व्यक्ति का जीवन ज्ञान रूपी प्रकाश से आलोकित हो जाता है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा आज की और भविष्य की जरूरतों के लिए अधिक प्रासंगिक बन सके और विद्यार्थियों को उसे दबाव से मुक्त किया जा सके जो कि आज शिक्षार्थी झेल रहे हैं। नए सीसीई पैटर्न का पाठ्यक्रम इसी पर आधारित है कि ज्ञान अर्जित करते समय बच्चों को ज्ञान का समग्र आनंद मिल सके और किसी वस्तु को समझने से मिलने वाली खुशी प्राप्त हो सके। शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया जनसंख्या में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के द्वारा न्यादर्श के रूप में 60 अध्यापक 120 विद्यार्थी 60 अभिभावकों को लिया गया तथा न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी ग्रामीण अध्यापक अभिभावकों और छात्रों को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया। सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिरुचि में वृद्धि होती है। सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम में अभिभावकों की सक्रियता बढ़ती है।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

शिक्षा को व्यक्ति और समाज दोनों का विकास करने वाली शक्ति के रूप में जाना जाता है एक तो शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार व विकास की प्रणाली है दूसरी ओर संपूर्ण समाज को नियंत्रित व संस्कारित करने की प्रक्रिया है। बच्चे अधिगम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब उन्हें यह लगे कि वह महत्वपूर्ण है हमारे विद्यालय आज भी सभी बच्चों को ऐसा महसूस नहीं करवा पाते हैं कि सीखने का आनंद व संतोष के साथ रिश्ता होने की बजाय भय, अनुशासन व तनाव का संबंध हो तो सीखना कठिन हो जाता है। अतः यह जरूरी है कि हमारे सभी बच्चे यह महसूस करें कि वे सभी उनके घर उनके समुदाय उनकी भाषा में संस्कृति समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है। सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है सीखने के वे सभी कार्य जो यह सुनिश्चित करने के लिए रचे गए हैं कि बच्चे पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य स्रोतों से भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित होंगे सीखने की प्रक्रिया का यह है रूप इस दर्शन को संप्रेषित करता है कि बच्चे स्वयं की खोज करके एवं प्रमाण जुटा के सीखते हैं एवं ज्ञान का सृजन करते हैं। भारत में परंपरागत रूप से पाठ्यक्रम निर्धारण में विषय आधारित दृष्टिकोण बनाया गया है। जो केवल विषयों पर आधारित होता है और इसमें पाठ्य पुस्तकों के द्वारा ज्ञान अर्जित होता है एवं इससे जुड़े हुऐ योग्यता के परीक्षण के लिए परीक्षा होती है व विषय क्षेत्र में दक्षता जांचने के लिए अंक भी दिए जाते हैं केवल पुस्तक के ज्ञान का ही मूल्यांकन होता है ज्ञान के अन्य स्वरूप जिनमें खेलकूद कौशल चतुराई रचनात्मक आदि के मूल्यांकन का कोई स्थान नहीं है। पाठ्यचर्या के सभी विषय परीक्षा के द्वारा जांचे जा सकते हैं वर्तमान में आकलन के जो प्रश्न निर्धारित किए जाते हैं उन्हें किताबी ज्ञान से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। शिक्षकों को ऐसे प्रश्न पत्र बनाने पर बल देने की आवश्यकता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को ही सार्थक मूल्यांकन माना गया है पर इसके प्रभावी उपयोग के लिए व इसके आकलन की विश्वसनीयता को रखने के

लिए यह मूल्यांकन शिक्षकों से यह मांग करता है कि वे अधिक समय दे व बच्चे का रिकॉर्ड कुशलता एवं सावधानी से रखा जायें।

शोध समस्या का औचित्य

विष्णु पुराण में कहा गया है कि "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात शिक्षा ही अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करती है और शिक्षित व्यक्ति का जीवन ज्ञान रूपी प्रकाश से आलोकित हो जाता है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है शिक्षा आज की और आने वाले समय के लिए अधिक प्रासंगिक बन सके और शिक्षार्थियों को उस दबाव से मुक्त किया जा सके जो कि आज शिक्षार्थी झेल रहे हैं नए सीसीई पैटर्न का पाठ्यक्रम इसी पर आधारित है। ज्ञान अर्जित करते समय बच्चों को ज्ञान का समग्र आनंद मिल सके और किसी वस्तु को समझने से मिलने वाली खुशी प्राप्त हो सके प्रस्तुत शोधपत्र में सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। नए सीसीई पैटर्न के पाठ्यक्रम से विद्यार्थी अभिभावक व अध्यापक कहां तक संतुष्ट है तथा सीसीई के पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ा है सीसीई पाठ्यक्रम को लागू होने पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। सीसीई पाठयक्रम को लागू होने पर अध्यापकों में अभिभावकों की अभिवृत्ति कैसी हो सकती है। विद्यार्थियों को यह पाठ्यक्रम रुचिकर लगता है या नहीं यह सब इस शोधपत्र द्वारा जाने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रकरण

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थी अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

शोध समस्या के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 व 10 में पढ़ाए जाने वाले नए सीसीई पैटर्न के पाठ्यक्रम के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का पता लगाना।
- माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 व 10 में पढ़ाई जाने वाले नए सीसीई पैटर्न के पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति को जानना।
- माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 व 10 में पढ़ाई जाने वाले सीसीई पैटर्न के पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के रुचियों में आए परिवर्तनों को जानना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रति अभिभावकों की अभिरुचि में वृद्धि होती है।
- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से अभिभावकों की सक्रियता बढ़ती है।
- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से बालकों को अपना लक्ष्य चुनना आसान होता है।

शोध अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया जनसंख्या में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के द्वारा न्यादर्श के रूप में 60 अध्यापक 120 विद्यार्थी 60 अभिभावकों को लिया गया तथा न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी ग्रामीण अध्यापक अभिभावकों और छात्रों को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थी अध्यापक और अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणत्मक अध्ययन के लिए स्वनिर्मित परीक्षण का उपयोग किया गया आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

सारिणी–1 : परिकल्पना 1 के लिए अभिमतों का बिन्दूवार प्रत्याशित आवृत्तियां व प्रेक्षित एवं काई वर्ग मूल्य सारिणी

अभियोग्यता	अध्यापकों का अभिमत			X^2
	सहमत	तटस्थ	असहमत	
प्रत्याशित आवृत्तियां (Fe)	20	20	20	11.40
प्रेक्षित आवृत्ति (Fo)	26	8	6	
प्रेक्षित आवृत्तियों का प्रतिशत	44.33	13.33	10.00	

Df= 4

0.05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मन 9.488

0.01 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मन 13.277

व्याख्या– उपरोक्त सारणी संख्या 1 का अध्ययन करने पर विद्युत होता है कि अध्यापकों की प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 1 से 6 पर 60 में से 26 सहमत हैं और 6 ऐसे होते हैं वह 8 तटस्थ हैं आतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिरुचि में वृद्धि हुई। अतः यह परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

सारिणी–2 : परिकल्पना 2 के लिए अभिमतों की बिंदूवार प्रत्याशित आवृतियां पर प्रेक्षित आवृत्ति एवं काई वर्ग मूल्य सारणी

अभियोग्यता	अध्यापकों का अभिमत			X^2
	सहमत	तटस्थ	असहमत	
प्रत्याशित आवृत्तियां (Fe)	20	20	20	13.2
प्रेक्षित आवृत्ति (Fo)	32	6	2	
प्रेक्षित आवृत्तियों का प्रतिशत	53.33	10.00	3.33	

Df= 4

0.05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 9.488
0.01 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 13.277

व्याख्या उपरोक्त सारणी संख्या 2 का अध्ययन करने पर विदित होता है कि अभिभावकों की प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 1 से 8 पर 60 में से 32 सहमत है जबकि 2 असहमत है तथा 6 तटस्थ हैं। अतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम में अभिभावकों की सक्रियता बढ़ती है।

सारिणी–3 : परिकल्पना 3 के लिए अभिमतों की बिंदुवार प्रत्याशित आवृतियां व प्रेक्षित आवृत्ति एवं काई वर्ग मूल्य सारणी

अभियोग्यता	अध्यापकों का अभिमत			X^2
	सहमत	तटस्थ	असहमत	
प्रत्याशित आवृत्तियां (Fe)	20	20	20	7.56
प्रेक्षित आवृत्ति (Fo)	28	8	4	
प्रेक्षित आवृत्तियों का प्रतिशत	13.33	16.66	20.00	

Df= 4

0.05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 9.488
0.01 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 13.277

व्याख्या– उपरोक्त सारणी संख्या 3 का अवलोकन करने पर विदित होता है कि अभिभावकों की यह प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 16 से 20 पर 60 में से 28 सहमत जबकि 4 असहमत तथा 8 तटस्थ हैं। आतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से बालकों को अपना लक्ष्य चुनना आसान नहीं होता है। अतः यह परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर व 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिरुचि में वृद्धि होती है। इसकी पुष्टि काई वर्ग परीक्षण से होती है। प्रेक्षित आवृतियां व प्रत्याशित आवृत्तियों के बीच अंतर 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक पाया जाता है।
- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम में अभिभावकों की सक्रियता बढ़ती है इस बात की पुष्टि काई वर्ग से होती है प्रेक्षित आवृत्तियों व प्रत्याशित आवृत्तियों के बीच अंतर 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है।
- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से बालकों को अपना लक्ष्य चुनना आसान नहीं होता है। इस बात की पुष्टि काई वर्ग मूल्य परीक्षण से होती है प्रेक्षित आवृत्तियों व प्रत्याशित आवृत्तियों के बीच अंतर 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर कम पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सुखिया मल्होत्रा : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. महेश भार्गव डॉक्टर अनु नेगी : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मूल्यांकन : भार्गव पब्लिकेशन, आगरा